ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

कोरोना संकट के पश्चात विश्वः मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक दृष्टिकोण

अनूप मिश्र

शोधार्थी

सारांशः– विश्व महामारी का यह संकट विश्व के सभी देशो के लिए बहुत बड़ी चुनौती लेकर आया है। यद्यपि इस कोरोना संकट के कारण विश्व के लाखो लोग काल के गाल में समा गये और अभी भी यह निश्चित नही है कि अभी कितने लोग इस महामारी के शिकार होगे। लेकिन प्रश्न यह खड़ा होता है कि कोरोना संकट के बाद विश्व का परिदृश्य कैसा होगा? कोरोना संकट के बाद विश्व के भूगोल, इतिहास, राजनीति तथा अर्थ एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में कितना परिवर्तन होगा? कोरोना संकट के बाद फिर दुनिया में वैश्विक राजनीति दो खेमों में बटने जा रही है तथा विश्व के सभी देशों के भीतर भी राजनीतिक हालात परिवर्तित होने लगेंगे। जो उनकी सरकारों पर भी व्यापक प्रभाव डालने वाले होंगे। जिस वजह से विश्व में विभिन्न देशों के अन्दर राजनीतिक उथल–पुथल देखने को मिल सकता है। कोरोना संकट ने व्यापक तौर पर देश के अन्दर तथा बाहर जो प्रभाव डाला है वह बहुत असीम और भयानक होगा और प्रत्येक देश में विपक्षी पार्टी इस संकट को भुनाने की कोशिश अवश्य करेंगे। इस कोरोना संकट के बाद विश्व में दो खेमों की राजनीति देखने को मिलेगी जो हमें प्रथम विश्वयुद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध तथा शीतयुद्ध के समय देखने के लिए मिला था।

सांकेतिक शब्दः– कोरोना संकट के पश्चात विश्व में मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक प्रभाव

प्रस्तावनाः–कोरोना वायरस विश्व महामारी की शुरुआत एक नये किश्म के कोरोना वायरस के संक्रमण के रुप में मध्य चीन के वुहान शहर में 2019 के मध्य दिसम्बर में हुई। बहुत से लोगो को विना किसी कारण निमोनिया होने लगा और देखा गया कि पीडित लोगो में से अधिकतर लोग वुहान सी फूड मार्केट में मछलियां बेचते है तथा जीवित पशुओं का भी व्यापार करते है। चीनी वैज्ञानिको ने बाद में कोरोना वायरस की नयी नश्ल की पहचान की। जिसे 2019–nCOV प्रारम्भिक पद नाम दिया गया। इस नये वायरस ने कम से कम 70 प्रतिशत वही जीनोम अनुक्रम पाये गये जो सार्स कोरोना वायरस में पाये जाते है। संक्रमण का पता लगाने के लिए एक विशिष्ट नैदानिक पीसीआर परीक्षण के विकास के साथ कई मामलो की पुष्टि उन लोगो मे हुई जो सीधे बाजार से जुडे हुए थे और उन लोगो में भी इस वायरस का पता लगा जो सीधे उस मार्केट से नही जुड़े हुए थे।

ज्ञातव्य हो कि विश्व महामारी का यह संकट विश्व के सभी देशो के लिए बहुत बड़ी चुनौती लेकर आया है। यद्यपि इस कोरोना संकट के कारण विश्व के लाखो लोग काल के गाल में समा गये और अभी भी यह निश्चित नही है कि अभी कितने लोग इस महामारी के शिकार होगे। लेकिन प्रश्न यह खड़ा होता है कि कोरोना संकट के बाद विश्व का परिदृश्य कैसा होगा? कोरोना संकट के बाद विश्व के भूगोल, इतिहास, राजनीति तथा अर्थ एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में कितना परिवर्तन होगा?

दरअसल इसका उत्तर इसीमें छिपा है क्योंकि यह महामारी किसी एक देश की समस्या नही है वरन यह वैश्विक पटल की महामारी है। अतः यह तथ्यो के आधार पर कहा जा सकता है कि कोरोना संकट के बाद विश्व का इतिहास, राजनीति, अर्थ ही नही वरन विभिन्न देशों के बीच मनोवैज्ञानिक दुरिया तथा मनोवैज्ञानिक नजदीकीया दिखाई दे सकती है। ज्ञातव्य हो कि कोरोना जैसी महामारी का सबसे अधिक प्रभाव यूरोप तथा पश्चिमी देशो पर पड़ा है तथा दक्षिण एशिया में इसका प्रभाव पश्चिमी देशो के अपेक्षा कम पड़ा है। इस वैश्विक महामारी को लाने में अमेरिका चीन को दोषी मानता है क्योकि चनी ने विश्व से इस महामारी को कई दिनो तंक छुपाने का काम किया है जिसके गंभीर परिणाम दिखाई दे रहे है। यहॉ तक कि यह भी कहा जाने लगा है कि इस कोरोना संकट के कारण कही तिसरा विश्व युद्ध न प्रारम्भ हो जाये। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बयान गौर करने लायक है ट्रम्प के अनुसार 'चीन से आया कोरोना, हम इसे हल्के में नही लेगे' इस तरह से शीतयुद्ध के बाद पुनः विश्व दो फाड़ में बटता दिखाई दे रहा है।

अध्ययन का उद्देश्यः–इस प्रपत्र का उद्देश्य कोरोना संकट के पश्चात विश्व में होने वाले राजनीतिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभाव को देखना है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

उत्तर कोरोना संकट तथा वैश्विक आर्थिक संकटः–कोरोना संकट के बाद विश्व के समक्ष एक सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक संकट की होगी क्योंकि विश्व के अधिकांश देश सोशल डिस्टेंसिंग को लागू कराने के लिए लाक डाउन को प्रमुख हथियार मानते है जो कोरोना के चेन को तोड़ सके। विश्व बैंक ने कोरोना वायरस महामारी की वजह से उत्पन्न आर्थिक संकट के बारे में कहा है कि आकलनो से इसके 2007–2009 की आर्थिक मंदी से गंभीर मंदी होने की आशंकाए लग रही है। विश्व बैंक के अध्यक्ष डेविड मालयास ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ सलाना ग्रीष्मकालीन बैठक के दौरान कहा कि कोरोना वायरस की वजह से सामने आये आर्थिक संकट को पुरी दुनिया में महसूस किया जा रहा है लेकिन गरीब देशों तथा वहां के लोगो पर इसका ज्यादा असर देखने को मिलेगा। उन्होने कहा कि अंतरराष्ट्रीय विकास संघ से मदद के पात्र देशों में दुनिया की सर्वाधिक गरीब आबादी का दो तिहाई हिस्सा रहता है। इनके उपर इस संकट का सबसे ज्यादा असर होगा।

विश्व बैंक के अध्यक्ष ने कहा कि कोरोना वायरस महामारी का स्वास्थ्य और चिकित्सा पर पड़ने वाले असर के अलावा वे बडी वैश्विक आर्थिक मंदी का अनुमान लगा रहे हैं। उत्पादन निवेश, रोजगार और व्यापार में गिरावट को देखते हुए हमारे आकलन से लगता है कि यह 2007–2009 की आर्थिक मंदी से भयानक होगा इससे पहले आइएमएफ भी यह आशंका व्यक्त कर चुका है कि कोरोना वायरस महामारी के कारण जो आर्थिक संकट उत्पन्न हो रहा है यह 1930 के दशक की महान आर्थिक मंदी के बाद का सबसे गंभीर वैश्विक आर्थिक संकट हो सकता है।

कोरोना संकट के पश्चात वैश्विक राजनीतिः–कोरोना संकट के पश्चात वैश्विक राजनीति की दशा और दिशा कैसी होगी? यह एक विकट प्रश्न है परन्तु यह जरुर कहा जा सकता है कि कोरोना काल के दौरान ही उस वैश्विक राजनीति की नींव पड़ चुकी हैं जो भावी कोरोना संकट के पश्चात हमें दिखाई देने वाला है। हालात ये हैं कि वैश्विक पटल पर अपनी धाक जमाने वाले अमेरिका इतना घायल हो चुका है कि अमेरिका में दिन–प्रतिदिन हो रही कोरोना से मौते थम नही रही है और यह आकड़ा लाखों में पहुचने वाला है। अमेरिकी राजनीतिक नेताओं के द्वारा बार–बार चीन पर यह आरोप लगाये जा रहे है कि कोरोना को फैलाने में चीन का ही हाथ है। जिससे अमेरिका और चीन के बीच दिन–प्रतिदिन दुरियां बढती जा रही हैं। यहां तक की अब रुस भी इस राजनीतिक वैचारिकी लडाई में कुद गया है। हालांकि खुद रुस में भी लाखों लोग कोरोना से ग्रसित हैं लेकिल रुस इसके लिए अपने पुराने दिनों का बदला भुला नही है जो उसे अमेरिका से लेना है तभी तो जब अमेंरिका ने सीधे–सीधे विश्व स्वास्थ्य संगठन पर सवाल उठा कर यह कहने का प्रयास किया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन पर चीन अपना प्रभाव जमा रखा है इसलिए इसे भंग करने की आवश्यकता है तब रुस इसके लिए अप्रत्यक्ष रुप से अमेरिका को ही नसीहत दे डाला और कहीं न कहीं चीन का समर्थन भी कर डाला।

ध्यातव्य हो कि कोरोना संकट के बाद फिर दुनिया में वैश्विक राजनीति दो खेमों में बटने जा रही है तथा विश्व के सभी देशों के भीतर भी राजनीतिक हालात परिवर्तित होने लगेंगे। जो उनकी सरकारों पर भी व्यापक प्रभाव डालने वाले होंगे। जिस वजह से विश्व में विभिन्न देशों के अन्दर राजनीतिक उथल–पुथल देखने को मिल सकता है। कोरोना संकट ने व्यापक तौर पर देश के अन्दर तथा बाहर जो प्रभाव डाला है वह बहुत असीम और भयानक होगा और प्रत्येक देश में विपक्षी पार्टी इस संकट को भुनाने की कोशिश अवश्य करेंगे। इस कोरोना संकट के बाद विश्व में दो खेमों की राजनीति देखने को मिलेगी जो हमें प्रथम विश्वयुद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध तथा शीतयुद्ध के समय देखने के लिए मिला था।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने तो आगे बढते हुए यहॉ तक कह दिया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्यक्ष टेड्रोस अधानोम चीन के हाथो खेल रहे है। ऐसी घटनाओं को तब और बल मिला जव चीन ने कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चर्चा पर रोक लगा दी है। जिससे इस प्रतिष्ठित वैश्विक संस्था की गंभीरता पर प्रश्न उठ रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपने वीटो पावर के दम पर भारत के फैसलों में दखल अंदाजी करने वाला चीन आज कोविड–19 पर वैश्विक चर्चा के लिए तैयार नही है। यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की भी एक विफलता भी है कि जिस महामारी के चलते पुरे विश्व में लाखों लोगों की जान खतरे में है ऐसे गंभीर मुद्दे पर अपने नियमों के चलते आज मानव कल्याण के नाम पर बनी यह संस्था चर्चा तक नही करा पा रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घट रही इन तमाम घटनाओं के बीच जो स्थिति बहुत स्पष्ट्र हो रही है कि जैसे–जैसे यह महामारी वैश्विक स्तर पर गहराती जायेगी ठीक उसी के साथ चीन इस पुरी समस्या का सबसे पेचीदा केन्द्रिय विमर्श बनता जायेगा।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

कोरोना संकट के पश्चात वैश्विक राजनीति में उथल–पुथल देखने को मिलेगा तथा एक नया समीकरण विश्व के समक्ष प्रस्तुत होगा। अमेरिका तथा चीन के बीच तो पहले से ही व्यापार युद्ध चला आ रहा था जो आगे कोरोना संकट के पश्चात युद्ध के रुप में परिणत होने की पुरी–पुरी संभावना है इसकी वजह से विश्व की विभिन्न देशों की राजनीति दो खेमों में बट जायेगी। यह आशंका भी जतायी जा रही है कि कोरोना संकट के पश्चात इस गंभीर संकट की जिम्मेदारी को लेकर तृतीय विश्वयुद्ध भी प्रारम्भ न हो जाय।

कोरोना संकट के पश्चात विश्व के विभिन्न देशों पर मनोवैज्ञानिक प्रभावः–वर्तमान में कोरोना की चेन को तोड़ने के लिए बार–बार चिकित्सकों द्वारा यह कहा जा रहा है कि सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना बहुत आवश्यक है तथा अभी जब तक कोरोना की वैक्सिन नही आती तब तक एक मात्र उपाय सोशल डिस्टेंसिंग ही है जो कोरोना की चेन को तोड़ सकती है। अतः कोरोना संकट के पश्चात यह सोशल डिस्टेंसिंग व्यक्तियों के बीच ही नही वरन देशों के बीच भी देखने को मिलेगा और विभिन्न देशों पर इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव देखने को मिलेगा। देशों के बीच मनोवैज्ञानिक प्रभाव होने से कई देशों के आपसी रिश्ते पर भी प्रभाव पड़ने की पुरी संभावना होगी। जिस प्रकार आज विश्व के कई देश इस कोरोना संकट के लिए चीन को उत्तरदायी ठहरा रहे हैं। उसी प्रकार कोरोना संकट के पश्चात चीन के प्रति विश्व के विभिन्न देशों की मानसिकता पहले से बदल जायेगी तथा संदेहास्पद भी हो जायेगी। इसका प्रभाव विभिन्न कंपनियों पर पड़ेगा जो दुसरे देशों द्वारा चीन में लगाया जा रहा था और जो लगे हुए थे वह धीरे–धीरे चीन से किनारा करने लगेंगे तथा उन देशों से भी दुर जाने का प्रयास करेंगे जहां कोरोना का प्रभाव सबसे अधीक है। अतः उन देशों के तरफ इन कंपनियों की मानसिकता जाने की होगी जिन पर कोरोना का प्रभाव सबसे कम है। तथाकथित रुप से वैश्विक नेंताओं की मानसिकता में भी परिवर्तन देखने को मिल सकता है जो देशों के बीच सम्बन्धों पर व्यापक प्रभाव डालने वाला होगा।

कोरोना संकट के पश्चात भारतीय राजनीतिः–भारत में कोरोना वायरस का प्रकोप बढता जा रहा है। केन्द्र और राज्य सरकारें इससे निपटने के लिए युद्ध स्तर पर काम कर रही हैं इसकी वजह से आर्थिक गतिविधियां ठप पड़ गयी हैं। लोग अपने घरो में बन्द हैं। हर क्षेत्र में इसके प्रभाव की चर्चा हो रही है राजनीति पर भी क्योंकि वह किसी न किसी रुप में हर क्षेत्र की गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं। अगर दुसरे क्षेत्र प्रभावित होगे तो वह भी होगी ही। लेकिन जितनी जल्दी कोरोना का प्रभाव स्वास्थ्य क्षेत्र और अर्थव्यवस्था पर दिख रहा है उतनी जल्दी शायद राजनीति पर नही दिखेगा लेकीन देर सबेर इसका असर उस पर भी पड़ना तय है।

भारत में पहले भी इस तरह की महामारी का असर राजनीति पर पड़ा है। 1918 में स्पैनिश फ्लू नाम की महामारी फैली थी। एक अनुमान के मुताबिक उस महामारी में भारत में 1.8 करोड़ लोगों की जान गयी थी। यह उस वक्त की भारत की आबादी का 6 प्रतिशत था। वाल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख में कोरोना की तुलना उस महामारी से की गयी है।

यदि भारत में कोरोना का फैलाव खतरनाक स्तर पर होता है तो जाहिर है कि आने वाले दिनों में जो चुनाव होंगे उनमें सभी पार्टियों से लोग यह उम्मीद करेंगे कि स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर वे एक स्पष्ट रणनीति सुझाएं। इसका मतलब यह हुआ कि स्वास्थ्य सुविधाए आने वाले समय में एक चुनावी मुद्दा बन सकता है। कोरोना का कहर लोगों के स्वास्थ्य और स्वास्थ्य क्षेत्र के अलावा सबसे अधिक कही दिख रहा है तो वह अर्थव्यवस्था है। विनिर्माण और सेवा क्षेत्र पर इसका प्रभाव दिखने लगा है। इस वजह से बेरोजगारी का संकट और गहराना तय माना जा रहा है। शेयर बाजार में गिरावट दर्ज की जा रही है। कुछ क्षेत्रों में अभी मांग बढी हुई जरुर दिख रही है लेकिन यह घबराहट में बढी हुई मांग है। रोजमर्रा के इस्तेमाल वाली वस्तुओं की बढी हुई मांग इसका प्रतिक है। लेकिन जो वस्तुए और सेवाएं रोजमर्रा में इस्तेमाल नही की जाती है उनकी मांग कम या न के बराबर हो गयी है। एक तरफ मांग कम और दुसरी तरफ उत्पादन बन्द ऐसे में मांग और आपूर्ति का पुरा चक्र गड़बड़ होने की आशंक है। इसका मतलब यह हुआ कि पहले से ही सुस्ती की शिकार भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आने वाले दिन और कठीन हो सकते है। ऐसे में राजनीति विमर्श के केन्द्र में आर्थिक मुद्दों का आना स्वाभाविक है।

शोध प्रारुपः–प्रस्तुत शोध प्रपत्र मुख्यतः विवरणात्मक शोध पाठ्य पर आधारित है जिसमें अध्ययन सम्बन्धी आंकड़ो का संकलन असहभागी अवलोकन और द्वितीयक तथ्यों पत्र–पत्रिका, रिपोर्ट आदि पर आधारित है।

निष्कर्षः–उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि वैश्विक महामारी कोरोना संकट के पश्चात विश्व के राजनीति, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक आदि क्षेत्र में वृहद स्तर पर परिवर्तन होने वाला है। आने वाले दिनों में राजनीतिक पार्टियों को जनता को यह

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

भी बताना होगा कि अर्थव्यवस्था की हालत सुधारने के लिए वे क्या ठोस उपाय करने वाले है। बेरोजगारी का संकट और उसमें भी विनिर्माण के बाद अब सेवा क्षेत्र में बेरोजगारी का संकट गहराने से इसकी आंच निम्न बर्ग के बाद अब मध्य वर्ग तक पहुचेगी। जहां तक विश्व की बात है इस वैश्विक महामारी को लेकर जिम्मेदारी किसकी होगी इसका भी संघर्ष आने वाले दिनों में दिखाई देने वाला है। वैश्विक राजनीति में इस कोरोना संकट के पश्चात सरकारों की मानसिकता भी बहुत कुछ परिवर्तित होगी। प्रत्येक देश आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करेगा तथा स्वदेशी वस्तुओं के क्रय–विक्रय पर बल देगा ताकि अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की जा सके।

सन्दर्भ सूचीः–

- "कोरोना वायरस भारतीय राजनीति को किस–किस तरह प्रभावित कर सकता है" सत्याग्रह, हिमान्शु शेखर, 28 अप्रैल 2020
- http://m.economictimes.com
- https://idronlina.org/
- https://www.financialexpress.com

 Copyright © 2020 Authors